

मंगलेश्वर महादेव मंदिर में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

महाशिवरात्रि के इस पर्व पर आप सभी को मंगलेश्वर महादेव मंदिर में महाशिवरात्रि की बहुत-बहुत शुभकामनाएं और बधाई। भारतीय संस्कृति, धर्म, अध्यात्म में देवों के देव महादेव का सर्वोच्च स्थान है। हर संकट, हर दुःख, हर पीड़ा के अंदर भगवान शिव (अश्रव्य) और जब भी इस धरती पर संकट आया, कलयुग में आया, सतयुग में आया, उस समय भी भगवान शिव ने विष पीकर हमेशा सृष्टि के कल्याण का मार्ग अपनाया। इसीलिए हर कष्ट, हर संकट के विष को पीना ही महादेव की कृपा है। आज इतने हजारों वर्ष बाद भी हमें इन्हीं संस्कारों की ओर चलना चाहिए। महादेव जी के जीवन दर्शन, शिव-पार्वती की कथा आज भी हमें यह कहती है कि जब समाज में संकट आए, दुख, पीड़ा आए, तो बड़ा व्यक्तित्व वह होता है, जो समाज के संकट को, विष को पी लेता है, इसीलिए उन्हें नीलकंठ महादेव कहते हैं। जब अमृत मंथन हुआ था, तो कौन अमृत पिए, कौन विष पिए की स्थिति में उन्होंने विष पिया था।

आज भी समाज में जो समाज का विष, संकट, दुःख, पीड़ा को पीता है, वही बड़ा व्यक्ति होता है। यही प्रेरणा महाशिवरात्रि का पर्व हमें देता है। इस मौके पर मैं चौथमल पहलवान जी को याद करना चाहता हूं, जिन्होंने कुश्ती को अपने उन नौजवानों के बीच में लोकप्रिय बनाया और किस तरीके से नौजवान तन, मन, शरीर से स्वस्थ रहे, इसके लिए उन्होंने जगह-जगह कुश्ती की परम्पराओं को और अधिक बढ़ाने का काम किया।

कुश्ती की परम्परा तो आदिकाल से है, लेकिन इस परम्परा को आगे बढ़ाना, पोषित करना और नौजवानों के बीच में लोकप्रिय करना एक बड़ा काम है। अगर हम नौजवानों को तन, मन से स्वस्थ रखना चाहते हैं और जीवन में अनुशासन रखना चाहते हैं, व्यसनों से मुक्ति चाहते हैं, गलत दिशा से दूर रहना चाहते हैं, तो हमें खेलों की ओर बढ़ना चाहिए, कुश्ती की ओर बढ़ना चाहिए। इसी को चौथमल पहलवान जी ने शुरू किया है। हमारे मध्य बाबा गोपीनाथ जी नहीं रहे, जिन्होंने इसको आगे बढ़ाने का काम किया। बाबा गोपीनाथ जी ने जगह-जगह कुश्ती कराना, उसके लिए नौजवानों को आकर्षित करना

आदि काम किए। एक समय था, जब कुश्ती मिट्टी में हुआ करती थी और शरीर की सबसे बड़ी कसरत अखाड़े को जोतना मानी जाती थी।

हम जीवन में जिन संस्कारों में पले-बढ़े, उसमें हम भी कुश्ती लड़ा करते थे। कुश्ती के लिए अखाड़े में मेहनत करना, उसे तैयार करना, जोतना ही सबसे बड़ा व्यायाम का काम होता था, जो आज भी है। हमारे बीच दत्ता साहब बैठे हैं, जो लंबे समय से इस परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। उनके अलावा शर्मा जी, गौतम जी तथा अन्य कितने सारे लोग हैं, जिनका मैं नाम लेता रह जाऊंगा। नाथूलाल जी ने इस परंपरा को लगातार 13 वर्षों से आगे बढ़ाया है। मेरा कई बार यहां आना हुआ है। उनके अनुसार महाशिवरात्रि पर केसरी दंगल होना ही होना है, यह निश्चित है।

यह हमारी परम्परा है। अखाड़ा लड़ने की कलाएं, पहले किसी समय में मिट्टी में लड़ते थे, आज इंटरनेशनल स्तर पर गद्दे पर लड़ते हैं तो इन्होंने गद्दे पर लड़ाना शुरू कर दिया। अब इस पद को, इस दिन को हम और बढ़ा करें, अन्य लोगों को आकर्षित करें, हमारे नौजवानों को अच्छे संस्कार दें, विचार दें, संस्कृति दें, आध्यात्मिक, धर्म, खेल आदि की शिक्षा दें तो वह शरीर से, मन से, तन से और अधिक स्वस्थ रहेगा। जब आप किसी शरीर से स्वस्थ नौजवान को देखते हो तो आपको भी लगता है, आपकी भी इच्छा होती है कि मेरा भी शरीर ऐसा बलिष्ठ हो। इसके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। इन नौजवानों को देखने के बाद अन्य नौजवानों को भी मेहनत करने की प्रेरणा मिलती है।

मैं इसके लिए नाथू लाल पहलवान जी, उनके पूरे परिवार को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ, बधाई देता हूँ, जो लगातार इस परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं। जो भी महिला, पुरुष इस खेल में आएंगे, वे खेल के मैदान में, कुश्ती के मैदान में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे, मेडल जीतेंगे, आज नहीं तो कल जीतेंगे, अपनी स्पोर्ट्समैन स्पिरिट को बनाए रखेंगे और जब तक अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँचेंगे, जब तक नहीं जीतेंगे तब तक कुश्ती लड़ते रहेंगे।
